ग्रन्थमाला ‘धार्मिक कृत्योंका अध्यात्मशास्त्र’ : देवतापूजन – खण्ड २

पूजासामग्रीका महत्त्व

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता

श्रीचित्‌शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळ

श्रीमती प्रियांका सुयश गाडगीळ

कु. मधुरा भिकाजी भोसले एवं अन्य

सनातन संस्था

सनातनकी ग्रन्थसम्पदाकी अद्वितीयता !

सनातनके अधिकांश ग्रन्थोंमें प्रकाशित लगभग २० प्रतिशत भाग ‘सूक्ष्मसे प्राप्त दिव्य ज्ञान’ है एवं वह पृथ्वीपर उपलब्ध ज्ञानकी तुलनामें अनोखा है !

ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजीके अद्वितीय कार्यका संक्षिप्त परिचय

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था'की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्गकी निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधनासे २०.९.२०२४ तक १२८ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४३ साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर है ।

३. आचारधर्मपालन, देवता, साधना, आदर्श राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विविध विषयोंपर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात'के संस्थापक-सम्पादक

५. हिन्दू राष्ट्रकी (ईश्वरीय राज्यकी) स्थापनाकी उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन तथा उनका दिशादर्शन !

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ।।
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा । – जयंत बाळाजी आठवले
१५.५.१९९६

सनातनके सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता साधकोंकी अद्वितीयता !

श्रीचित्‌शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळ

श्रीमती प्रियांका सुयश गाडगीळ

कु. मधुरा भिकाजी भोसले

सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता साधक पृथ्वीपर कहीं भी उपलब्ध नहीं, ऐसे अध्यात्मके विविध विषयोंपर गहन अध्यात्म-शास्त्रीय ज्ञान सूक्ष्मसे प्राप्त करते हैं । वे कोई घटना, धार्मिक विधि, यज्ञ आदि का सूक्ष्म परीक्षण भी करते हैं। ईश्वरसे प्राप्त यह ज्ञान ग्रहण करनेके लिए उन्हें आसुरी शक्तियोंके आक्रमणोंका भी सामना करना पडता है । ऐसा होते हुए भी गुरुकृपाके बलपर वे यह सेवा करते ही हैं ।

अनुक्रमणिका

१. पूजाकी थालीमें विभिन्न घटकोंकी रचना किस प्रकार करें ? १५

२. सप्तनदियोंका जल १६

३. रुईके वस्त्र १८

४. जनेऊ १९

५. हलदी, कुमकुम, सिन्दूर, गुलाल एवं गन्ध २०

६. इत्र ३३

७. पुष्प ३५

८. पत्री ४०

९. अक्षत ४४

१०. गन्धाक्षत, अष्टगन्ध, तिलक (चन्दन), रक्तचन्दन,
हलदी, कुमकुम, बुक्का एवं सिन्दूरका महत्त्व ४९
११. पानका पत्ता ५०
१२. सुपारी ५२
१३. नारियल ५५
१४. पंचखाद्य (सूखा मेवा), पंचफल एवं हलदीकी गांठ ५५
१५. नीरांजनकी बाती ५६
१६. उदबत्ती (अगरबत्ती) एवं धूप ५७
१७. कर्पूर ६६
१८. नैवेद्य (भोग) ६७
१९. दक्षिणा ६८
२०. भस्म, गायका गोबर एवं पानी ६९
२१. रंगोली ७०
२२. पंचगव्य ७१
२३. पूजासामग्रीके घटकोंसे सीखनेको मिले गुण ७३
२४. पूजासे सम्बन्धित विविध वस्तुएं, उनसे होनेवाले लाभकी
मात्रा, शुद्ध करनेका माध्यम एवं शुद्ध होनेवाली देह ७४

बिना औषधिके व्याधिनिवारण सिखानेवाला सनातनका ग्रन्थ !

रिफ्लेक्सोलॉजी (हथेली एवं तलवे के बिन्दुओंपर दबाव)

- ‘रिफ्लेक्सोलॉजी’ के अनेक मतोंमेंसे विशेषज्ञोंने निश्चित किए बिन्दु !
- चित्रोंकी सहायतासे विशिष्ट बिन्दु खोजनेके सन्दर्भमें मार्गदर्शन !

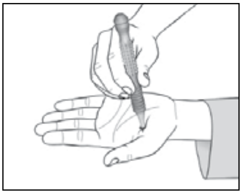

卐 — 'धार्मिक कृत्योंका अध्यात्मशास्त्र' ग्रन्थमालाकी भूमिका — 卐

प्राचीन कालमें हिन्दुओंकी शिक्षापद्धतिमें 'धर्म' विषय अन्तर्भूत होता था । धर्मका महत्त्व ज्ञात होनेसे बहुसंख्य हिन्दुओंके जीवनका केन्द्रबिन्दु धर्म ही था । कालान्तरमें हिन्दुओंको धर्मशिक्षा मिलनी बंद हो गई । स्वाभाविक ही हिन्दुओंमें धर्माचरणकी प्रवृत्ति भी घट गई । वर्तमानमें मनाए जानेवाले त्योहार, उत्सव, व्रत तथा परम्परागत धार्मिक कृत्योंके कारण अधिकांश हिन्दुओंकी धर्मनिष्ठा एवं ईश्वरोपासना टिकी हुई है । इसी कारण विविध नित्य एवं नैमित्तिक धार्मिक कृत्योंको हिन्दुओंके सामाजिक, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक जीवनमें एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है । धार्मिक कृत्योंमें दैनिक पूजा-अर्चना तथा मन्दिर जानेसे लेकर मृत्युके उपरान्त करनेयोग्य आवश्यक अनेक कृत्योंका समावेश होता है । ये धार्मिक कृत्य आज भी उतनी ही श्रद्धासे किए जाते हैं । इसका एकमात्र कारण है इन कृत्योंके आधारभूत सिद्ध अध्यात्मशास्त्रसे लोगोंको हुई अनुभूतियां !

धार्मिक कृत्य करनेवालेको कृत्यका यथार्थ शास्त्र ज्ञात हो, तो कृत्यके प्रति उसका विश्वास बढता है तथा महत्त्व समझमें आनेसे वह कृत्य अधिक श्रद्धापूर्वक करता है । श्रद्धापूर्वक किए गए कृत्यका फल अधिक अच्छा होता है । वर्तमानमें उपलब्ध धर्मशास्त्रसम्बन्धी ग्रन्थोंमें धार्मिक कृत्यकी जानकारी तो दी है; परन्तु उसकी सूक्ष्म स्तरकी आध्यात्मिक कारणमीमांसा नहीं दी गई । ईश्वरीय कृपासे प्राप्त ज्ञानकी ग्रन्थमाला 'धार्मिक कृत्योंका अध्यात्मशास्त्र' की विशेषता यह है कि इसमें धार्मिक कृत्योंके सूक्ष्म अध्यात्मशास्त्रको स्पष्ट करनेके साथ कृत्यकी उचित पद्धति भी बताई गई है ।

बडे-बूढे या जानकार लोग जो कहते थे, उसपर विश्वास रख पहलेकी पीढियां कृत्य करती थीं । आज युवा पीढी प्रत्येक बातकी कारणमीमांसाको जाननेपर ही उसे स्वीकार करती है । धार्मिक कृत्योंकी शास्त्रीय कारणमीमांसा युवा पीढीको ज्ञात हो, तो वे अध्यात्मकी ओर शीघ्र आकर्षित होंगे ।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि इस ग्रन्थमालामें दिए गए धार्मिक कृत्योंको आचरणमें लानेकी सद्‌बुद्धि सबको मिले और उनकी शीघ्र आध्यात्मिक उन्नति हो । – **संकलनकर्ता**

पाठकोंसे विनती !

१. साधकोंको ईश्वरकी कृपासे ज्ञान मिलनेकी प्रक्रियाकी गति प्रचण्ड है तथा आसुरी शक्तियां ज्ञानप्राप्तिमें बाधाएं उत्पन्न कर रही हैं एवं उनके द्वारा अनुचित ज्ञान (जानकारी) देनेकी सम्भावना है । इस कारण साधकोंद्वारा ज्ञान ग्रहण करनेमें चूक रहनेकी सम्भावना होती है; इसलिए उन्हें ज्ञानमें मिली और धर्मशास्त्रमें बताई क्रियाके सम्बन्धमें जानकारी अथवा सैद्धान्तिक विवेचनमें भिन्नता होनेकी सम्भावना है । हम धर्मशास्त्र को ही प्रमाण मानते हैं । अतः पाठकोंसे विनती है कि ऐसी भिन्नतादर्शक क्रिया अथवा सैद्धान्तिक विवेचन दिखाई दे, तो हमें सूचित करें । ग्रन्थके आगामी संस्करणमें इस सन्दर्भमें उचित सुधार किया जाएगा ।

२. ‘केवल ईश्वर ही लिख सकते हैं’, ऐसी अद्वितीय भाषाशैली और अध्यात्मसे सम्बन्धित प्रत्येक विषयका अधिकाधिक सूक्ष्म-स्तरपर विवेचन करनेवाले अध्यात्मशास्त्रीय ज्ञानका अनुपम संगम यह ज्ञान, हमें अभी तक अन्यत्र कहीं भी दिखाई नहीं दिया । इसलिए वह अद्वितीय है, ऐसा हम मानते हैं । ईश्वरकी कृपासे इस प्रकारका ज्ञान अन्योंको भी मिल सकता है । ऐसे लोग इस सम्बन्धमें हमें सूचित करें, तो आगामी संस्करणमें हम उसका उल्लेख करेंगे । – **प्रकाशक**

टिप्पणी

प्रस्तुत ग्रन्थमें अनेक स्थानोंपर ‘परात्पर गुरु डॉक्टर’ अथवा ‘परात्पर गुरु डॉ. आठवले’, ऐसा उल्लेख ग्रन्थके संकलनकर्ताओंमेंसे ‘परात्पर गुरु डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजी’के सन्दर्भमें है ।